



*Yogoda Satsanga  
Mahavidyalaya*

Jagannathpur, Dhurwa, Ranchi-834004



[www.ysmranchi.net](http://www.ysmranchi.net)



[ysmranchi4@gmail.com](mailto:ysmranchi4@gmail.com)

**Course : MJ 1**

**Sem : 1**

**Lesson : Concept of  
Bharatvarsha  
(Syllabus Introduction)**

**By : Dr. Amrita Dutta**



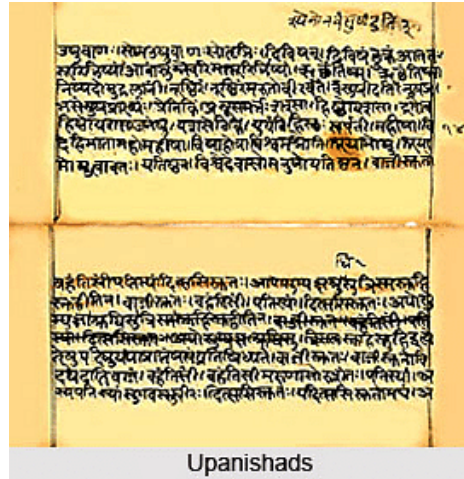


**This Video is an Intellectual  
Property of  
Yogoda Satsanga Mahavidyalaya,  
Dhurwa, Ranchi, Jharkhand**



# भारत की प्राचीन लिपियाँ - इतिहास

भारत की दो प्रमुख प्राचीन लिपियाँ हैं : ब्राह्मी लिपि और खरोष्ठी लिपि। भारत में अधिकांश प्राचीन और आधुनिक लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ली गई हैं , जिनमें देवनागरी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, ओडिया, असमिया/बंगाली और अन्य शामिल हैं। नतीजतन, यह तर्क देना संभव है कि ब्राह्मी लिपियों की जननी है। एक स्क्रिप्ट को एक लेखन प्रणाली या वर्तनी के रूप में भी जाना जाता है। यह किसी माध्यम (कागज, चट्टानों, सन्टी-छाल आदि) पर विशिष्ट चिह्न बनाकर बोली जाने वाली भाषा के विभिन्न भागों का प्रतिनिधित्व करने की एक विधि है।



Upanishads





- सिंधु घाटी सभ्यता की अघोषित लिपि उपमहाद्वीप के सबसे पुराने लेखों में से एक है।
- मौर्य काल से पहले गंगा घाटी के विभिन्न उन्नत राज्यों के साथ-साथ वैदिक साहित्य के कई उदाहरण मौजूद थे।
- ब्राह्मी लिपि मौर्य सम्राट अशोक के शिलालेखों में पाई गई थी ।
- उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान और अफगानिस्तान की खरोष्ठी लिपि अरामाईक लिपि से ली गई थी।
- अरामिक लिपि के उपयोग का श्रेय फारसियों को दिया जाता है जिन्होंने सिंधु घाटी के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।



# भारत की प्राचीन लिपियाँ - उत्पत्ति और विकास

- संस्कृतियों में अंतर के कारण, क्षेत्र के आधार पर क्षेत्रों की ब्राह्मी लिपि विभिन्न प्रकारों में विकसित हुई थी।
- स्मारकीय शिलालेखों के उपयोग के बजाय त्वरित दृष्टिकोण पर अधिक जोर देने के कारण सरसरी शैलियों का उदय हुआ जिसने भारत की आधुनिक लिपि का निर्माण किया।
- ताड़ के पत्तों पर लिखने के कारण दक्षिण भारत में लिपियाँ गोल हो गईं ।
- जबकि उत्तर भारत में कपड़े और भूर्ज की छाल के प्रयोग से कोणीय रेखाएँ बन जाती थीं ।
- उर्दू एक अरबी-व्युत्पन्न लिपि में लिखी जाती है , और कुछ छोटी भाषाएँ, जैसे संथाली, स्वतंत्र लिपियों का उपयोग करती हैं।





# लिपियों के प्रकार

## सिंधु लिपि

- सिंधु लिपि सिंधु घाटी सभ्यता द्वारा निर्मित एक प्रतीक कोष है ।
- अधिकांश शिलालेख अत्यंत संक्षिप्त हैं।
- यह स्पष्ट नहीं है कि ये प्रतीक किसी भाषा को रिकॉर्ड करने के लिए उपयोग की जाने वाली लिपि का हिस्सा हैं या नहीं।



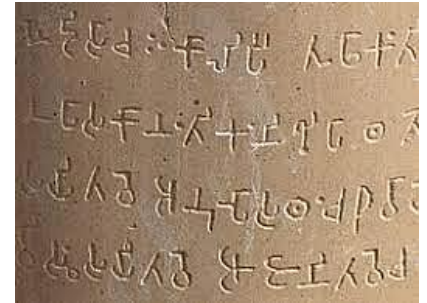
सिंधु लिपि





# ब्राह्मी लिपि

- ब्राह्मी सबसे पुरानी लेखन प्रणालियों में से एक है, जिसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य एशिया में अंतिम शताब्दी ईसा पूर्व और प्रारंभिक शताब्दी सीई के दौरान किया गया था।
- कुछ का मानना है कि ब्राह्मी आधुनिक सेमिटिक लिपि से ली गई थी, जबकि अन्य का मानना है कि यह सिंधु लिपि थी।
- ब्राह्मी दक्षिण पूर्व एशिया में सभी जीवित इंडिक लिपियों का पूर्वज है।
- यह अधिकतर बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- इसकी प्रत्येक इकाई एक व्यंजन पर आधारित है।



ब्राह्मी लिपि





# गुप्ता लिपि

- इसका उपयोग संस्कृत लिखने के लिए किया जाता था और गुप्त साम्राज्य से संबंधित था ।
- नागरी , शारदा और सिद्धम लिपियाँ सभी गुप्त लिपि से निकली हैं, जो ब्राह्मी से निकली हैं।
- इन लिपियों ने भारत की कई सबसे महत्वपूर्ण लिपियों को जन्म दिया, जिनमें देवनागरी, पंजाबी के लिए गुरुमुखी लिपि, असमिया लिपि, बंगाली लिपि और तिब्बती लिपि शामिल हैं।
- ब्राह्मी लिपि के इन सभी वंशजों को ब्राह्मी लिपि कहा जाता है ।



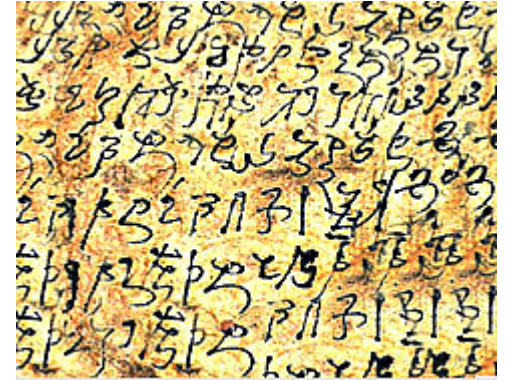
गुप्ता लिपि





# खरोष्ठी लिपि

- खरोष्ठी लिपि (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व - तीसरी शताब्दी ईस्वी) प्राचीन गांधार (वर्तमान अफगानिस्तान और पाकिस्तान) में गांधारी प्राकृत और संस्कृत लिखने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक प्राचीन लिपि है ।
- यह ब्राह्मी की बहन लिपि है और इसे जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।
- इसमें रोमन अंकों के समान संख्याएँ शामिल हैं।
- यह अधिकतर दाएँ से बाएँ लिखा जाता है।



Kharosthi Script





# वैदेलुदु स्क्रिप्ट

- वैदेलुदु वर्णमाला एक दक्षिण भारतीय अबुगिडा लेखन प्रणाली है ।
- वैदेलुदु ग्रंथी या पल्लव वर्णमाला और तमिल लिपि लिखने के लिए तमिल लोगों द्वारा विकसित तीन मुख्य वर्णमाला प्रणालियों में से एक है।
- यह तमिल-ब्राह्मी से लिया गया है ।





# कदंब लिपि

- कदंब लिपि एक समर्पित कन्नड़ लिपि के जन्म की शुरुआत करती है ।
- यह भी, ब्राह्मी लिपि का वंशज है और चौथी-छठी शताब्दी में कदंब राजवंश के शासनकाल के दौरान विकसित किया गया था ।
- इस लिपि को बाद में कन्नड़-तेलुगू लिपि में रूपांतरित किया गया ।



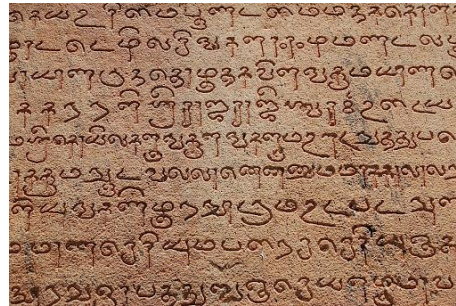
कदंब वंश के सिक्के कदंब लिपि में लिखे गए हैं





# ग्रन्थ लिपि

- छठी और बीसवीं शताब्दी के बीच, दक्षिण भारत में तमिल भाषी, विशेष रूप से तमिलनाडु और केरल में, संस्कृत और शास्त्रीय भाषा मणिप्रवलम लिखने के लिए ग्रन्थ लिपि का उपयोग किया।
- यह अभी भी पारंपरिक वैदिक विद्यालयों में प्रयोग किया जाता है।
- यह एक ब्राह्मी लिपि है जो तमिलनाडु ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है।
- मलयालम लिपि, तिगलरी और सिंहल वर्णमाला की तरह, ग्रंथ का प्रत्यक्ष वंशज है।



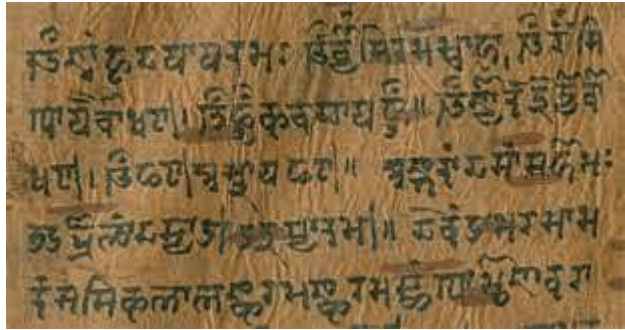
## ग्रन्थ लिपि





# शारदा लिपि

- सारदा या शारदा लिपि आठवीं शताब्दी के आसपास उभरी लिपियों के ब्राह्मी परिवार की एक अबुगिदा लेखन प्रणाली है।
- यह संस्कृत और कश्मीरी के लेखन में कार्यरत था।
- इसका उपयोग एक बार अधिक व्यापक था, लेकिन बाद में इसे कश्मीर तक ही सीमित कर दिया गया था, और धार्मिक उद्देश्यों के लिए कश्मीरी पंडित समुदाय को छोड़कर अब इसका शायद ही कभी उपयोग किया जाता है।



शारदा पांडुलिपि





# ਗੁਰੁਮੁਖੀ ਲਿਪਿ

- ਗੁਰੁਮੁਖੀ ਸਾਰਦਾ ਲਿਪਿ ਸੇ ਵਿਕਸਿਤ ਹੁੰਦੀ ਐਂਰ 16ਵੀਂ ਸ਼ਤਾਬਦੀ ਮੇਂ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਦੁਵਾਰਾ ਇਸਕਾ ਮਾਨਕੀਕਰਨ ਕਿਆ ਗਯਾ ।
- ਇਸ ਲਿਪਿ ਕਾ ਤਪਯੋਗ ਪੂਰੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਕੋ ਲਿਖਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਕਿਆ ਜਾਤਾ ਹੈ ਐਂਰ ਪੰਜਾਬੀ ਲਿਖਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਸਿਖੀ ਐਂਰ ਹਿੰਦੂਆਂ ਦੁਵਾਰਾ ਸਬਸੇ ਅਧਿਕ ਇਸਤੇਮਾਲ ਕੀ ਜਾਨੇ ਵਾਲੀ ਲਿਪਿ ਹੈ।

ਇਹ ਮੇਰਾ ਘਰ ਹੈ । ਇਸ ਵਿਚ ਮੇਰੇ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਭੈਣ ਤੇ  
ਭਰਾ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ । ਘਰ ਇੱਟਾਂ ਤੇ ਲਕੜ ਦਾ ਬਣਿਆ ਹੈ ।  
ਇਸ ਵਿਚ ਚਾਰ ਸੌਣ ਵਾਲੇ ਕਮਰੇ ਹਨ । ਇਕ ਬੈਠਕ ਹੈ ।  
ਘਰ ਵਿਚ ਇਕ ਰਸੋਈ ਅਤੇ ਦੋ ਗੁਮਲਖਾਨੇ ਹਨ । ਘਰ ਦੇ  
ਅੱਗੇ ਬਗੀਚਾ ਹੈ । ਉਸ ਵਿਚ ਸੁੰਦਰ ਫੁਲ ਹਨ । ਫੁਲ ਲਾਲ  
ਪੀਲੇ ਤੇ ਚਿੱਟੇ ਰੰਗ ਦੇ ਹਨ ।

ਗੁਰੁਮੁਖੀ ਲਿਪਿ







# मोदी लिपि

- मोदी एक ऐसी लिपि है जिसका प्रयोग मराठी लिखने में किया जाता है ।
- मोदी बीसवीं शताब्दी तक आधिकारिक मराठी लिपि थी , जब देवनागरी लिपि की बालबोध शैली को मानक मराठी लेखन प्रणाली के रूप में प्रचारित किया गया था।
- हालाँकि मोदी मुख्य रूप से मराठी लिखने के लिए इस्तेमाल किए जाते थे, लेकिन यह भी ज्ञात है कि इसका इस्तेमाल उर्दू, कन्नड़, गुजराती, हिंदी और तमिल लिखने के लिए भी किया जाता था।

ॐ ऋषेयी ध्या।  
पेद्य प्रतिपाद्या।  
ऋष ऋष स्यापेद्या।  
धत्तरुपा॥

मोदी स्क्रिप्ट





# उर्दू लिपि

- उर्दू वर्णमाला उर्दू भाषा का दाएँ-से-बाएँ वर्णमाला है ।
- यह फ़ारसी वर्णमाला का एक संशोधन है , जो अरबी वर्णमाला से लिया गया है और 13 वीं शताब्दी का है ।
- यह फ़ारसी-अरबी लिपि की नस्तालिक शैली के विकास से जुड़ा हुआ है ।
- अपने विस्तारित रूप में, उर्दू लिपि को शाहमुखी लिपि के रूप में जाना जाता है , और इसका उपयोग उत्तर भारतीय उपमहाद्वीप की अन्य इंडो-आर्यन भाषाओं, जैसे पंजाबी और सरायकी को लिखने के लिए किया जाता है।



## करिने बाली وڈ کی پرکشش ترین حسینہ منتخب

ممبئی (وقت نیوز) اداکارہ کرینہ کپور بالی وڈ کی پرکشش ترین حسینہ منتخب ہو گئی ہیں۔ وہ شارڈسٹ میگزین کی فہرست کے مطابق پرکشش ترین حسیناؤں میں پہلے نمبر پر ہیں۔ اس بار شارڈسٹ میگزین نے دس پرکشش ترین حسیناؤں کی فہرست تیار کی ہے، اس میں کرینہ کے علاوہ کترینہ، دلچسپ اور پریانکا بھی شامل ہیں۔ اس بار سے میں کرینہ کپور نے انٹرویو میں کہا کہ مجھے خوشی ہے کہ میں نے بالی وڈ کی پرکشش حسیناؤں میں پہلی پوزیشن حاصل کی ہے۔ میں کرینہ کی جگہ حاصل کی ہے۔ تاہم مجھے یہ پوزیشن میرے کام کی وجہ سے ملی ہے کیونکہ میرا ذاتی خیال ہے کہ خوبصورتی سے زیادہ عرصہ تک مقام نہیں بنایا جاسکتا۔ میں اس وقت بالی وڈ کی کامیاب اداکاراؤں میں شمار ہوتی ہوں۔ میری خوش قسمتی ہے کہ میں نے بالی وڈ کے اسے سٹڈنٹوں کے ساتھ کام کر لیا ہے لیکن میں ابھی بھی اچھے کام کی تلاش میں ہوں۔ میں نے کبھی پیکوش نہیں کی کہ میری وجہ سے فلم کامیاب ہو ویسے بھی کسی ایک فنکار کی وجہ سے کوئی فلم کامیاب نہیں ہوسکتی۔ انہوں نے کہا کہ فلم کی کامیابی میں کہانی کے علاوہ کاسٹ کا اچھا ہونا بھی ضروری ہے۔





# अनेकांतवाद और स्याद्वाद

जैन धर्म में, वास्तविकता के आध्यात्मिक पक्ष के असंख्य पहलू हैं, जिसे अनेकांतवाद कहा जाता है, ज्ञानमीमांसा और तार्किक पक्ष जिसे हम वास्तविकता के कुछ पहलुओं को ही जान सकते हैं और इसलिए सभी निर्णय आवश्यक रूप से सापेक्ष हैं, स्याद्वाद कहलाते हैं।

- जैन धर्म के अनुसार, कोई भी एकल, विशिष्ट कथन अस्तित्व की प्रकृति और पूर्ण सत्य का वर्णन नहीं कर सकता है।
- यह ज्ञान (केवला ज्ञान), यह जोड़ता है, केवल अरिहंतों द्वारा समझा जाता है।
- पूर्ण सत्य के बारे में अन्य प्राणी और उनके कथन अधूरे हैं, और अधिक से अधिक आंशिक सत्य हैं।





# अनेकांतवाद

- जैन तत्त्वमीमांसा, जिसे अनेकांतवाद या वास्तविकता की बहुलता का सिद्धांत कहा जाता है, एक यथार्थवादी और सापेक्षवादी बहुलवाद है। किसी वस्तु के अपने अनंत गुण होते हैं।
- यह कई, विविध, यहां तक कि विरोधाभासी दृष्टिकोणों की एक साथ स्वीकृति को संदर्भित करता है।
- यह इस बात पर जोर देता है कि अंतिम सत्य और वास्तविकता जटिल है, और इसके कई-पहलुओं यानी बहुलता का सिद्धांत है।
- किसी वस्तु की इन असंख्य विशेषताओं में से कुछ स्थायी और आवश्यक (गुण या गुण) हैं - जिसके बिना वस्तु वह नहीं रह जाएगी जो वह है। अन्य बदल रहे हैं और आकस्मिक हैं - (मोड या पर्याय) - जो संशोधन की अनुमति देते हैं।
- किसी एक पक्षीय और आंशिक मत को ही संपूर्ण सत्य मान लेने की भूल एकांतवाद की भ्रान्ति करना है। चूंकि जैन धर्म इन सभी आंशिक विचारों को ध्यान में रखता है, इसलिए इसे अनेकांतवाद कहा जाता है।



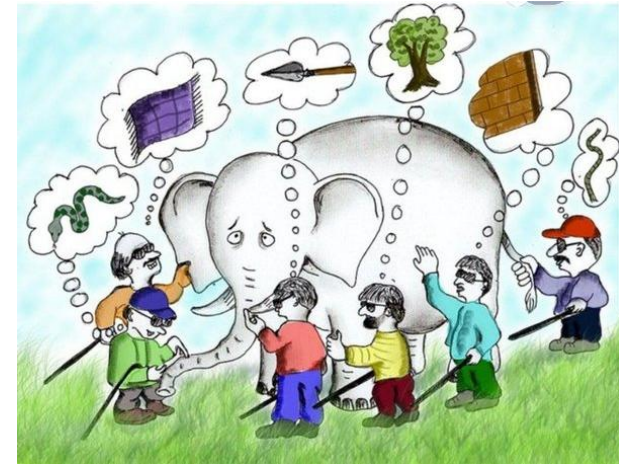


- यह हमारे तार्किक दृष्टिकोण को पुनः स्थापित करना चाहता है और हमें वास्तविकता के सही माप के रूप में विरोधाभासों के एकीकरण को स्वीकार करने के लिए कहता है। यह विरोधाभासी वास्तविकता के रहस्य को खोलने की कुंजी है।
- यह पुष्टि करता है कि अस्तित्व की एकता और पहलुओं की बहुलता के बीच कोई विरोध नहीं है। अलग-अलग विशेषताओं के कब्जे से वास्तविक की पहचान का खंडन नहीं किया जाता है।
- यह भी दावा करता है कि पहचान और अन्यता के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि वे पूर्ण विशेषताएं नहीं हैं।
- इस प्रकार अनेकांतवाद-गैर-निरंकुशता-वास्तविकता की बहु प्रकृति का नियम है।



अनेकांतवाद को एक हाथी और पांच अंधे लोगों की कहानी से बहुत ही सरल तरीके से समझा जा सकता है। पांच अंधे एक हाथी को छूते हैं और फिर अपने अनुभव सुनाते हैं। एक अंधा आदमी जब हाथी की पूंछ पकड़ता है तो वह सोचता है कि यह रस्सी जैसी कोई चीज है, इसी तरह एक और अंधा आदमी हाथी की सूंड पकड़ लेता है और वह सोचता है कि यह तो सांप है।

इसी तरह तीसरे ने हाथी का पैर पकड़ा और कहा कि यह खंभा जैसा कुछ है, किसी ने हाथी का कान पकड़ लिया तो उसने कहा कि यह कोई सूप जैसी चीज है, सबकी अपनी-अपनी व्याख्या है। सभी एक साथ आए तो जमकर हंगामा हुआ। सभी को सत्य का बोध हो गया था पर पूर्ण सत्य नहीं, एक ही वस्तु में अनेक गुण होते हैं, पर प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने मत से वस्तु के कुछ गुणों को गौण और कुछ को प्रमुखता से देखता है। यह बहुलवाद का सार है।





# स्याद्वाद

यहाँ प्रयुक्त 'स्यात्' शब्द सापेक्ष के अर्थ में है और स्याद्वाद का सही अनुवाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है। वास्तविकता के अनंत पहलु हैं। उन सभी को जानना सर्वज्ञ (केवल-ज्ञान के माध्यम से) बनना है। लेकिन इन सभी पहलुओं को जान पाना हम आम लोगों के लिए संभव नहीं है। इसलिए, हमारे सभी निर्णय आवश्यक रूप से सापेक्ष, सशर्त और सीमित हैं, जो केवल कुछ स्थितियों, परिस्थितियों या इंद्रियों में अच्छे हैं।

- 'स्यात्' या 'अपेक्षाकृत बोलना' हमारे सभी निर्णयों से पहले होना चाहिए। पूर्ण प्रतिज्ञान और पूर्ण निषेध दोनों गलत हैं। हमारे सभी निर्णय सशर्त और दोधारी हैं।
- स्याद्वाद का शाब्दिक अर्थ है 'विभिन्न संभावनाओं की जांच करने की विधि'।

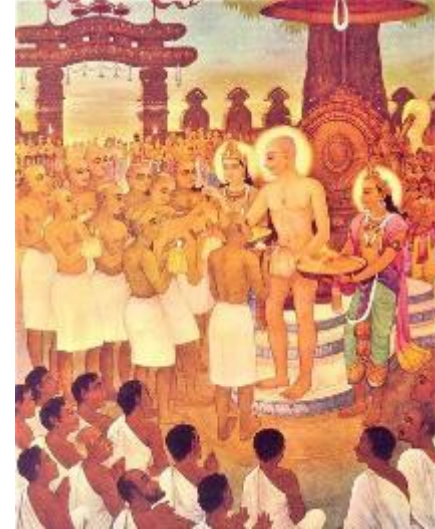
साधारण मनुष्य में सम्पूर्ण यथार्थ को पहचानने की शक्ति नहीं होती, परन्तु अपने ज्ञान की पूर्णता का दावा करने के लालच में वह अपने सीमित ज्ञान को पूर्ण ज्ञान के रूप में प्रस्तुत कर देता है। जिस प्रकार छः अंधे यह नहीं समझ पाते कि उनके दावे सत्य से कोसों दूर हैं, उसी प्रकार आम आदमी जीवन भर फालतू के दावे करता रहता है, पर यह नहीं समझता कि उसकी बातों में कोई दम नहीं है।

महावीर कहते हैं कि आदमी को हर दावे से पहले यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि उसकी बात केवल सापेक्ष है। सरल भाषा में, व्यक्ति को अपनी राय देते समय, कुछ सापेक्ष वाक्यांशों का उपयोग करते रहें जैसे 'जहाँ तक मैं समझता हूँ', 'मुझे विश्वास है', 'मुझे लगता है', 'मुझे जो जानकारी है उसके अनुसार' आदि। ऐसी भाषा न केवल विनम्रता दर्शाती है बल्कि इस बात का भी खतरा नहीं होता है कि व्यक्ति की बात गलत साबित हो जाएगी।



# अनेकांतवाद और स्याद्वाद के बीच अंतर

दो शब्द एक ही सिद्धांत के दो पहलू हैं या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उनके बीच मूल अंतर यह है कि अनेकांतवाद सभी भिन्न लेकिन विपरीत गुणों का ज्ञान है जबकि स्यादवाद किसी वस्तु या घटना के किसी विशेष गुण के सापेक्ष वर्णन की एक प्रक्रिया है।





Thank You